काव्य रंजन

पाठ्य पुस्तक

बी.कॉम/एम.बी.एस./बी.कॉम(हानर्स)/बी.कॉम (इन्शुरेन्स)

(ए.ई.सी.सी. भाषा तहत)

B.Com.,/M.B.S./B.Com(Hon)/B.Com(Insurance)
(Language Under AECC)

तृतीय सेमिस्टर / III Semester

संपादक

डॉ. शेखर

डॉ. मोहम्मद अन्जरूल हक

डॉ. रोहिणी बाई. एस.

डॉ. फरियाल शेख

प्रसारांग

बेंगलूरू नगर विश्वविद्यालय

बेंगलूरू–560 001

KAVYA RANJAN

Edited by:

Dr. Shekhar

Dr. Mohamed Anzarul Haq

Dr. Rohini Bai . S

Dr. Fariyal Shaikh

बेंगलूरू नगर विश्वविद्यालय

प्रथम संस्करणः 2022

प्रधान संपादकः

डॉ. शेखर

प्रकाशकः

प्रसारांग

बेंगलुरू–560 001

भूमिका

बेंगलूरु नगर विश्वविद्यालय में 2021–22 शैक्षिक वर्ष से एन.ई.पी – 2020 पद्धति के अनुसार स्नतक वर्गों के लिए नया पाठ्यक्रम जारी किया जा रहा है।

इस पाठ्यक्रम की संरचना ऐसी की गई है कि इसके अध्ययन के पश्चात् हिंदी साहित्य के विद्यार्थी यह जान सके कि साहित्य का विश्लेषण कैसे किया जाए, उसकी सराहना कैसी की जाए और दिए गए पाठ को पढ़ने की समझ किस प्रकार विकसित की जाए ताकि विद्यार्थी भाषा और साहित्य के उद्देश्य से भली भाँति परिचित हो सके। जैसे विज्ञान आदि विषयों के अध्ययन के साथ यह भी अधिक उपयोगी है। विश्वविद्यालय की यह शुभेच्छा है कि साहित्य और समाजशास्त्री विषयों के लिए भी अधिक उपयोगी और प्रासंगिक लगे। एन.ई.पी. सेमिस्टर पद्धति के अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण किया गया है।

इस पृष्ठभूमि में हिन्दी–अध्ययन–मण्डल ने विभागाध्यक्ष डॉ. शेखर जी के मार्गदर्शन में पाठ्य–पुस्तक का निर्माण किया है।

संपादक मण्डल का विश्वास है कि यह काव्य संकलन छात्र समुदाय के लिए अधिक उपयोगी सिद्ध होगा। इस पाठ्य पुस्तक के निर्माण में योग देने वाले सभी के प्रति विश्वविद्यालय आभारी है।

डॉ. लिंगराज गाँधी

कुलपति

बेंगलूरु नगर विश्वविद्यालय

बेंगलूरु–560 001

प्रधान संपादक की कलम से.....

बेंगलूरु नगर विश्वविद्यालय 2021–22 शैक्षिक क्षेत्र में नये–नये विषयों को अपने अध्ययन की सीमा में ले रहा है। अध्ययन को नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुसार प्रस्तुत करने का प्रयत्न हो रहा है। साहित्यिक विषयों को आज की बदलती परिस्थिति के अनुसार रखने के उद्देश्य से पाठ्यक्रम को प्रस्तुत किया जा रहा है।

एन.ई.पी. सेमिस्टर पद्धति के अनुसार स्नातक वर्गों के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण किया जा रहा है। इस पाठ्य पुस्तक के निर्माण में योग देने वाले सम्पादकों के प्रति मैं आभारी हूँ।

इस नयी पाठ्य पुस्तक के निर्माण में कुलपति महोदय डॉ. लिंगराज गाँधी जी ने अत्यधिक प्रोत्साहन दिया, तदर्थ मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ।

डॉ. शेखर

अध्यक्ष

हिन्दी (बी.ओ.एस)

बेंगलूरु नगर विश्वविद्यालय

बेंगलूरू–560 001

अनुक्रमणिका

1. साखी सुधा

– कबीरदास ...01

2. बाल लीला

– सूरदास ...03

3. रहीम के दोहे

– रहीम ...05

4. यह धरती कितना देती है

– सुमित्रानंदन पंत ...07

5. फूल और काँटा

– अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध ...12

6. माँ के प्रति

– स्वदेश भारती ...14

7. **मोम दीप मेरा**

– माखनलाल चतुर्वेदी ...17

8. सन्ध्या सुन्दरी

– सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ...20

परिशिष्ट

I. कठिन शब्दार्थ ...22

II. कवि परिचय ...25

III. वाणिज्य एवं प्रशासनिक शब्दावली ...34

1. साखी सुधा

कबीरदास

1. साधु कहावत कठिन है, लांबा पेड खजूर।
चढे तो चाखे प्रेम रस, गिरे तो चकनाचूर।।

2. जो जल बढई नाव में, घर में बाढई दाम।
दोनो हाथ उलीचिए, यही सज्जन को काम।।

3. माला फेरत जग मुआ, गया न मन का फेर।
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।।

4. पानी केरा बुदबुदा, अस मानुस की जात।
देखत ही छिप जाएगा, जो तारा परभाती।।

5. चलती चक्की देखि करि, दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में, साबित बचा न कोई।।

6. जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पडा रहने दो म्यान।।

7. जहाँ दया तहाँ धर्म है, जहाँ लोभ तहाँ पाप।
जहाँ क्रोध तहाँ काल है, जहाँ क्षमा तहें आप।।

8. अच्छे दिन पाछे गए, हरि सो किया न हेत।
अब पछताए होत का, चिडिया चुग गई खेत।।

9. सोना सज्जन साधु जन, टूटी जुरै सौ बार।
दुर्जन कुंभ कुम्हार के, एकै धका दरार।।

10. बोली एक अनमोल है, जो कोई बोले जानि।
हिये तराजू तौलिके, तव मुख बाहर आनि।।

.....

2. बाल लीला

सूरदास

सुत मुख देखि जसोदा फूली
हरषति देखि दूधि की दँतियाँ, प्रेम तन की सुधि भूली।
बाहर तै तब नंद बुलाए, देखो धौ सुंदर सुखदाई।
तनक तनक सी दूध दंतुलियाँ, देखौ,
नैन सफल करो आई।
आनंद सहित महर तब आए,
मुख चितवत दोऊ नैन अघाई।
सूर स्याम किलकत द्विज देख्यौ,
मनो कमल पर बिज्जू जमाई।।

हरि अपनै आंगन कछु गावत।
तनक तनक चरननि सौ नाचत, मनहि रिझावत।
बाँह उठाई कजरी धौरी, गैयनि टेरी बुलावत।
कबहुंक बाबा नंद पुकारत, कबहुँक घर मैं आवत।
माखन तनक आपने कर लै, तनक बदन मे नावत।
कबहुँक चितै प्रतिबिंब खम्ब मैं, लौनी लिए खवावत।

दूरी देखती जसुमति वह लीला, हरष आनंद बढावत।
सूर स्याम के बाल चरित, नित नितही देखत भावत।।

मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायो।
मोसो कहत मोल को लीनहों, तू जसुमती कब जायो।
कहा करौं यही रिस के मारे खेलन हौ नहि जातु।
पुनि पुनि कहत, कौन है माता को है तुम्हारे तातु।
गोरे नंद जसोदा गोरी, तुम कत स्याम सरीर।
चुटकी दे दे हंसत बाल सब, सिखई देत बलवीर।
तू मोही को मारने सीखी दाऊहीं कबहूँ खीझई।
मोहन को रिससमेत लखि, जसुमति सुनी सुनी रीझव।
सुनहु कान्हा बलभद्र चबाई जनमत ही को धूर्त।
सूर स्याम मो गोधन की सौं हौं माता तू पूत।।

.....

3. रहीम के दोहे

रहीम

1. तरूवर फल नहिं खात है, सरवर पियाहि न पान।
   कही रहीम दीन्ही लखै, संपति सच हि सुजान।

2. यों रहीम सुख होत है, उपकारी के अंग।
   बांटनवारे को लगे, ज्यों मेंहदी को रंग।।

3. रहिमन देखि बडेन को, लघु न दीजिये डारि।
   जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि।।

4. कह रहीम सम्पति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
   विपति कसौटी जे कसे, सोई सांचे मीत।।

5. रहिमन धागा प्रेम का, मत तोडो चटकाई।
   टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ पड जाय।।

6. कदली, सीप, भुजंग मुख स्वाति एक गुन तीन।
   जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन।

7. रहिमन कठिन चिताहु ते, चिंता कर चित चेत।
   चिता दहित निर्जीव कहाँ, चिंता जीव समेत।।

8. जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
   चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग।।

9. रहीमन निज मन की व्यथा, मन ही राखौ गोय।
सुनि अठलैही लोग सब, बाँटी न लैही कोय।।

10. बिगरी बात बनी नहिं,लाख करो किन कोय।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय।।

.....

4. यह धरती कितना देती है

सुमित्रानंदन पंत

मैंने छुटपन में छिपकर पैसे बोए थे,
सोचा था, पैसो के प्यारे पेड उगेंगे,
रूपयों की कलदार मधुर फसलें खनकेंगी
और फूल फूलकर मैं मोटा सेठ बनूँगा।
पर बंजर धरती में एक न अंकुर फूटा,
बन्ध्या मिट्टी ने न एक भी पैसा उगला
सपने जाने कहाँ मिटे, कब धूल हो गये
मैं हताश हो, बाट जोहता रहा दिनों तक
बाल कल्पना के अपलक पाँवडे बिछाकर
मैं अबोध था, मैंने गलत बीज बोए थे
ममता को रोपा था, तृष्णा को सींचा था।

अर्धशती हहराती निकल गई है तब से!
कितने ही मधु, पतझर बीत गए अनजाने
ग्रीष्म तपे, वर्षा झूली, शरदे मुसकाई,
सी–सी कर हेमंत कँपे, तरू झरे, खिले वन

औ जब फिर से गाढी ऊदी लालसा लिए
गहरे कजरारे बादल बरसे धरती पर
मैंने कौतूहलवश आँगन के सहलाकर
बीज सेम के दबा दिए मिट्टी के नीचे
भू के अंचल में मणि–माणिक बाँध दिए हों।।

मैं फिर भूल गया इस छोटी सी घटना को
और बात भी क्या थी, याद जिसे रखता मन
किन्तु एक दिन जब मैं संध्या को आँगन में
टहल रहा था, तब सहसा मैंने जो देखा
उससे हर्ष–विमूढ हो उठा, मैं विस्मय से
देखा, आँगन के कोने में कई नवागत
छोटा–छोटा छाता ताने खडे हुए हैं।

छाता कहूँ कि विजय पताकाएँ जीवन की
या हथेलियाँ खोले थे वे नन्हीं, प्यारी–
जो भी हो, वे हरे–हरे उल्लास से भरे,
पंख मार कर उडने को उत्सुक लगते थे,
डिंब तोडकर निकले चिडियों के बच्चों से

निर्निमेष क्षण भर मैं उसको रहा देखता
सहसा मुझे स्मरण हो आया—कुछ दिन पहले
बीज सेम के रोपे थे मैंने आँगन में
और उन्हीं से बौने पौधों की यह पलटन
मेरी आँखों के सम्मुख अब खडी गर्व से
नन्हें नाटे पैर पटक, बढती जाती है।

तब से उनको रहा देखता धीरे—धीरे
अनगिनत पत्तों से लद भर गई झाडियाँ
हरे—भरे टँग गए कई मखमली चँदोवे ?
बेलें फैल गई बल खा, आंगन में लहरा—
और सहारा लेकर बाडे की टट्टी का
हरे—हरे सौ झरने फूट पडे ऊपर को
मैं अवाक् रह गया वंश कैसे बढता है।

छोटे तारो—से छितरे, फूलों के छींटे
झागों—से लिपटे लहरी श्यामल लतरों पर
सुन्दर लगते थे, मावस के हँसमुख नभ—से
चोटी के मोती से आँचल के बूटों—से

ओह, समय पर इनमें कितनी फलियाँ टूटी
कितनी सारी फलियाँ कितनी प्यारी फलियाँ
पतली चौडी फलियाँ–उफ उसकी क्या गिनती
लंबी–लंबी अंगुलियों सी, नन्ही नन्ही
तलवारों सी, पन्ने के प्यारे हारों सी
झूठ न समझें, चन्द्र कलाओं सी नित बढती
सच्चे मोती की लडियों–सी ढेर–ढेर खिल
झुण्ड–झुण्ड झिलमिलकर कचपचिया तारों–सी।।

आ इतनी फलियाँ टूटी , जाडों भर खाई
सुबह शाम वे घर भर में पकी, पडोस पास के
जाने–अनजाने सब लोगों में बँटवाई
बंधु–बांधवों, मित्रों, अभ्यागत, मँगतो ने,
जी भर भर दिन–रात मुहल्ले भर ने खाई
कितनी सारी फलियाँ, कितनी प्यारी फलियाँ।।

यह धरती कितना देती है! धरती माता ।
कितना देती है अपने प्यारे पुत्रों को
नहीं समझ पाया था मैं उसके महत्व को

बचपन में, छिः स्वर्थ लोभवश पैसे बोकर
रत्न प्रसविनी है वसुधा, अब समझ सका हूँ।
इसमें सच्ची समता के दाने बोने हैं,

इसमें जन की क्षमता के दाने बोने हैं
इसमें मानव–ममता के दानो बोने हैं,
जिससे उगल सके फिर धूल सुनहली फसलें
मानवता की–जीवन श्रम से हँसे दिशाएँ
हम जैसा बोएँगे, वैसा ही पाएँगे।।

.....

5. फूल और काँटा

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

हैं जनम लेते जगह में एक ही
एक ही पौधा उन्हें है पालता।
रात में उनपर चमकता चाँद भी
एक ही–सी चाँदनी है डालता।

मेंह उनपर है बरसता एक सा
एक–सी उनपर हवाएँ हैं बहीं,
पर सदा ही यह दिखाते हैं हमें
ढंग उनके एक से होते नहीं।

छेदकर काँटा किसी की उँगलियाँ,
फाड देता है किसी का वर वसन।
प्यार–डूबी तितलियों का पर कतर,
भौरें का है बेध, देता श्याम तन।

फूल लेकर तितलियों को गोद में
भौरें को अपना अनूठा रस पिला।
निज सुगंधों और निराले ढंग से,
है सदा देता कली जी को खिला।

है खटकता एक सबकी आँख में
दूसरा है सोहता सुर–सीस पर
किस तरह कुल की बढ़ाई काम दे,
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।

.....

6. माँ के प्रति

स्वदेश भारती

ओ माँ, मैं जब पहली बार
तुम्हारी गोद में आया
तो बहुत रोया था
रोया था इसलिए कि
पता नहीं कैसे, कितना प्यार दोगी तुम।
अपने शिशु से
हर माँ की आशाएँ होती हैं
कि वह युवक बने,
अच्छे से पढ़े लिखे,
सुन्दर सी बहू आए
जो माँ की सेवा करे,
गृहस्थी सँभाले,
अच्छी संतान जने,
घर को खुशहाली से भर दे।
किन्तु माँ,
मैं तो तुम्हारी गोद में
पहली बार आया

तब निरा शिशु था।

दिमाग के रेशे बन रहे थे

सोच थी नहीं उस समय

बस एक गुदगुदा माँस का लोथरा था

जिसमें एक पेट था

जो खाली होने पर चीखता

और भर जाने पर मुस्कान से

तुम्हारी आँखों में खुशी के आँसू देखता और

आनंद–स्फुरण से भर देता घर–संसार

जब मैं आया तुम्हारी गोद में पहली बार।

मैं उस समय अजान निर्बोध शिशु था

तुम्हारी चिंता, तुम्हारी भविष्य की आशा

तुम्हारे सपने, पहचान नहीं सकता था

फिर भी तुम्हारी खुशी

और दुःख के आँसू

जब–जब मेरे कपोलों को भिगोते थे

तब–तब मैं सहम उठता था

क्योंकि मैं तुम्हारे हृदय का अंश था

और तुम्हारे कुल का पहला वंश था।

मेरे भीतर तुम्हारी आत्मा की छाया थी
तुम्हारे दुःख, तुम्हारे आँसू
मेरे भीतर के शिशु–मर्म को प्रभावित करते
परंतु आज मैं समय–सिंधु–तट पर
चलते–चलते थक गया हूँ।
शरीर–सौंदर्य का भग्नावशेष मात्र रह गया हूँ
फिर भी तुम माँ हो, और माँ शाश्वत होती है
किसी के जीवन में, सिर्फ माँ ही होती है
जो उसके सुख–दुःख को हृदय से लगाती है
और जीवन पर्यन्त सुख, शांति, समृद्धि की
प्रार्थना करती है।
माँ का कभी भी नहीं होता प्यार कलुष
और इसे मैंने अनुभव किया
जब नंगे बदन
तुम्हारी कोख से निकल कर रोया था
और तुम्हारा कोमल मधुर ममत्व भरा चुंबन
उपहार में मिला था।

.....

7. मोम दीप मेरा

माखनलाल चतुर्वेदी

सूझ का साथी
मोम दीप मेरा।
कितना बेबस है यह,
जीवन का रहस्य है यह
छन–छन, पल–पल, बल बल
छू रहा सबेरा, अपना अस्तित्व भूल
सूरज को टेरा
मोम दीप मेरा।

इतना बेबस दीखा
इसने मिटना सीखा
रक्त रक्त, बिंदु बिंदु
झर रहा प्रकाश सिंधु
कोटि–कोटि बना व्याप्त
छोटा सा घेरा।
मोम दीप मेरा।

जी से लग, जेब बैठ
तम बल पर जमा पैठ
जब चाहूँ जाग उठे
जब चाहूँ सो जावे,
पीड़ा में साथ रहे
लीला में खो जावे।
मोम दीप मेरा।

नभ की तम गोद भरे
नखत कोटि, पर न झरे
पढ़ न सका उनके बल
जीवन के अक्षर ये।
आ न सके उतर उतर
भूल न मेरे घर ये।
इन पर गर्वित न हुआ
प्रणय गर्व मेरा
मेरे बस साथ मधुर
मोम दीप मेरा।

जब चाहूँ मिल जावे
जब चाहूँ मिट जावे
तुम से जब तुमुल युद्ध
ठने, दौड़ जुट जावे
सूझो के रथ पथ का ज्वलित लघु चितेरा।
मोम दीप मेरा।

जब गरीब, यह लघु लघु
प्राणों पर यह उदार
बिंदु बिंदु
आग आग
प्राण प्राण
यज्ञ ज्वार
पीढ़ियाँ प्रकाश पथिक
जाग रथ गति चेहरा।
मोम दीप मेरा।

(हिमतरंगिनी से)

8. सन्ध्या–सुन्दरी

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह सन्ध्या–सुन्दरी परी–सी
धीरे–धीरे–धीरे
तिमिरांचल में चंचलता का नहीं कहीं आभास,
मधुर मधुर हैं दोनों उसके अधर–
किन्तु गम्भीर, नहीं है उनमें हास–विलास।
हँसता है तो केवल तारा एक
गुँथा हुआ उन घुँघराले काले–काले बालों से,
हृदय–राज्य की रानी का वह करता है अभिषेक।
अलसता की–सी लता
किन्तु कोमलता की वह कली,
सखी नीरवता के कन्धे पर डाले बाँह,
छाँह–सी अम्बर–पथ से चली।
नहीं बजती उसके हाथों में कोई वीणा,
नहीं होता कोई अनुराग–राग–आलाप,
नूपुरों में भी रूनझुन–रूनझुन नहीं,
सिर्फ एक अव्यक्त शब्द–सा "चुप,चुप,चप"
है गूँज रहा सब कहीं–

व्योममण्डल में, जगतीतल में–
सोती शान्त सरोवर पर उस अमल कमलिनी–दल में–
सौन्दर्य–गर्विता–सरिता के अतिविस्तृत वक्ष स्थल में–
धीर–वीर–गम्भीर शिखर पर हिमगिरि–अटल–अचल में–
उताल–तरंगाघात–प्रलय–घन–गर्जन–जलधि–प्रबल में–
क्षिति में, जल में, नभ में, अनिल–अनल में–
सिर्फ एक अव्यक्त शब्द–सा "चुप,चुप,चप"
है गूँज रहा सब कहीं–
और क्या है ? कुछ नहीं।
मदिरा की वह नदी बहती आती,
थके हुए जीवों को वह सस्नेह
प्याला एक पिलाती,
सुलाती उन्हें अंक पर अपने,
दिखलाती फिर विस्मृति के वह कितने मीठे सपने ;
अर्द्धरात्रि की निश्चलता में हो जाती जब लीन,
कवि का बढ़ जाता अनुराग,
विरहाकुल कमनीय कंठ से
आप निकल पड़ता तब एक विहाग।

.....

परिशिष्ट

I. कठिन शब्दार्थ

1. साखी सुधा – कबीरदास

चाखे–चखना, दाम–पैसा, दोउ–दोनों, उलीचिए–बाहर डालना, दुजै–दूसरा, केरा–का, परभाति–प्रभात, प्रातःकाल, सुबह, मोल करो–मूल्य आंकना, म्यान–जिसमें तलवार रखी जाती है, काल–अंत, मृत्यु, पछिताए–पश्चताप करना, जुरै–जुडना, कुंभ–घडा, धका–धक्का, हिये–हृदय में, तौलिके–तौलना।

2. बाल लीला – सूरदास

फूली–प्रफुल्लित होना, दँतियाँ–दाँत, तनक–तनक–छोटे–छोटे, महर–नन्द, अघाई–तृप्त हो गए, किलकत–किलकारी मारना, बिज्जु–बिजली।

रिझावत–प्रसन्न होना, कजरी–काले रंग की, धौरी–सफेद रंग की, टेरी–जोर से, भावत–अच्छा लगना।

मैया–माँ, मोहि–मेरी, दाऊ–बड़े भाई बलराम, खिझायौ–चिढाना, मोसो–मुझसे, कहत–कहते हैं, जायो–जन्म देना, मोल को लीन्हों–खरीदा गया, कहा कहौ–क्या करूँ, यहि–इस, रिस–क्रोध, खेलन–खेलने, जातु–जाता, पुनि–पुनि–बार–बार, कहत–कहते हैं, को–कौन, तातु–पिता, कत–कैसे, स्याम–साँवले, सरीर–शरीर, सिखई देत–सिखा देना, बलवीर–बलराम, मोहि–मुझे, सीखी–सीखना, दाऊहिं–बड़े भाई, कबहुँ–कभी भी, खीझे–गुस्सा होना, रिस समेत–क्रोध भरी, लखि–देखकर, रीझव–मुस्कुराना, सुनहु–सुनो, कान्हा–श्रीकृष्ण,

बलभद्र–बलराम, चबाई–चुगलखोर, जनमत ही को धूर्त–जन्म से ही धूर्त, बदमाश है। मो–मैं, सौं–कसम, शपथ, हौं–हैं, पूत–पुत्र।

3. रहीम के दोहे – रहीम

तरूवर–पेड़, सरवर–सरोवर, पियहि–पीना, लघु–छोटा, तरवारि–तलवार, सम्पति–धन, बनत–सहयोगी होना, विपति–विपत्ति, साँचे–सच्चे, मीत–मित्र, चटकाई–झटका लगाकर तोडना, कदली–केला, भुजंग–साँप, चिताहु–चिता, कुसंग–बुरे चरित्रवाला, निज–अपने, गोय–गोपनीय, अठलैही–मज़ाक, माखन–मक्खन।

4. यह धरती कितना देती है – सुमित्रानंदन पंत

कलदार–रूपया, बन्ध्या–बंजर, अपलक–एकटक, अबोध–भोला, हताश–निराश, अर्धशती–पचास वर्ष, मधु–वसंत ऋतु, माणिक–रत्न, हर्षविमूढ–प्रसन्नता से पागल, नवागत–नये आये हुए, उल्लास–प्रसन्नता, डिंब–अंडा, निर्निमेष–अपलक, चँदोबे–बितान, अवाक–आश्यर्च चकित, मावस–अमावस, अभ्यागत–मेहनत, रत्न प्रसविनी–रत्नों को पैदा करनेवाली।

5. फूल और काँटा – अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

मेंह–बारिश, सदा–हमेशा, वर–सबसे अच्छा, बसन–कपड़ा, पर–पंख, कतरना–काटना, बेधना–घाव करना, श्याम–काला, तन–शरीर, अनूठा–निराला, जी–हृदय, मन, खटकना–बुरा लगना, सोहना–अच्छा लगना, सुर–देवता, सीस–सिर, कुल–वंश, बढाई–प्रशंसा, बड़प्पन–बड़ा होने की भावना, कसर–कमी।

6. माँ के प्रति – स्वदेश भारती

निरा–एकदम, शिशु–बच्चा, रेशे–नस, गुदगुदा–कोमल, लोथरा–टुकड़ा, स्फुरण–स्फूर्ति, कंपन, निर्बोध–बिना बाधा के, कपोल–गाल, सहम–भय, डर, अंश–भाग, भग्नावशेष–टूटी फूटी वस्तुओं के बचे हुए टुकड़े, कोख–गोद, शाश्वत–सत्य, कलुष–मैल, गंदा पाप, ममत्व–प्यार भरा, उपहार–भेंट, सौगात।

7. मोम–दीप मेरा – माखनलाल चतुर्वेदी

मोम–दीप– मोम का दीया, शमा, मोमबत्ती, टेरा–पुकारा, प्रकाश–सिन्धु–रोशनी का समुद्र, बहुत–अधिक रोशनी, कोटि–करोड़ों, तम–बल –अँधरे की ताकत, आसुरी शक्तियाँ, अज्ञान, नखत–नक्षत्र, सितारे, गर्वित–अभिमान से भरा, प्रणय–गर्व–प्रेम का अभिमान, तुमुल युद्ध–भयंकर लड़ाई, घोर समर, सूझ–बुद्धि, ज्ञान, विवेक, ज्वलित लघु चितेरा–जलता हुआ या प्रकाशमान छोटा–सा चित्रकार, लघु–छोटा, यज्ञ–ज्वार–पवित्रता का फैलाव, पीढ़ियाँ प्रकाश–पथिक–आनेवाली पीढ़ियाँ इसकी रोशनी में अपना रास्ता पाएँगी, जग–रथ–गति–चेरा–संसार रूपी रथ की रफ्तार या गति को सहायता देनेवाला।

8. सन्ध्या–सुंदरी – सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

दिवसावसान–शाम, तिमिरांचल–अंधकार का आंचल, अधर–होंठ, नीरवता–शब्दरहित अवस्था, अंबर–पथ–आकाश मार्ग, नूपुर–पायल, कमलिनी–छोटा कमल, उत्ताल–ऊँची–ऊँची, तरंगाघात–लहरों की चोट, कमनीय–सुंदर, विहाग–रात के दूसरे पहर में गाया जानेवाला राग।

II. कवि परिचय

1. कबीरदास

कबीरदास भक्तिकाल के ज्ञानमार्गी शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। कबीर बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी थे। कबीर भक्त, समाजसुधारक, चिंतक, दार्शनिक, रहस्यवादी कवि थे। उन्होंने अपने व्यक्तित्व एवं चिंतन से समय और समाज को प्रभावित किया था।

कबीर का जन्म वाद–विवादों से भरा है। उनका जन्म काशी में हुआ था। नीरू और नीमा दंपति ने इन्हें पाला–पोसा था। कबीर की पत्नी का नाम लोई और उनकी संतानों का नाम कमाल और कमाली था। कबीर जुलाहे थे। इनके गुरू रमानन्द थे।

कबीर के राम निर्गुण, निराकार और घट–घट वासी हैं। इनके काव्य में गुरू की महानता परमात्मा की सर्वव्यापकता, नाम स्मरण की महत्ता, आचरण की शुद्धता, जीवन के अनुभवों से प्राप्त नैतिक विचारों का चित्रण है। इनके काव्य का मूल उद्देश्य समाज को सही रास्ता दिखाना है। अतः इन्होंने मूर्ति–पूजा, जात–पांत का विरोध तीर्थ स्थान की यात्रा, पूजा पाठ, साधु संगति, मधुर वचन, भक्ति एवं उपदेश आदि पर प्रकाश डाला है।

कबीर पढ़े–लिखे नहीं थे, मगर लोकानुभव के धनी थे। उनकी भाषा सधुक्खड़ी है। इनकी शैली सरल, सहज, स्पष्ट, बोधगम्य, काव्यमयी एवं प्रभावशाली है। इनकी रचनाएँ साखी, सबद और रमैनी के रूप में हैं।

2. सूरदास

हिन्दी साहित्य के कृष्णभक्त कवियों में सूरदास का स्थान सर्वोपरी है। सारस्वत ब्राह्मण परिवार में इनका जन्म हुआ था। कहा जाता है कि गऊ घाट भर महाप्रभु वल्लभाचार्य ने इन्हें पुष्टि मार्ग की दीक्षा दी थी। इसके पहले वे विनय पदों की रचना करते थे पर दीक्षा के बाद वे श्रीकृष्ण की लीला गान करने लगे। वे जन्मांध थे। श्रीनाथ जी के मंदिर में कीर्तन सेवा करना ही उनका प्रमुख कर्म था।

सूर के आराध्यदेव श्रीकृष्ण हैं। इनके काव्य का मुख्य विषय कृष्ण भक्ति है। इनकी रचनाओं में विनय, श्रृंगार और वात्सल्य रस की प्रधानता है। वात्सल्य रस वर्णन में ये बेजोड़ हैं। 'सूर सागर' में कृष्ण की लीलाओं का सरस एवं विस्तृत वर्णन है। वात्सल्य से सने मातृहृदय के चित्रण में सूर हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। इनका श्रृंगार वर्णन भी अद्वितीय है। संयोग एवं वियोग श्रृंगार का मार्मिक वर्णन सूर ने जैसा किया है वह अन्यत्र दुर्लभ है। वियोग श्रृंगार का सुंदर चित्रण 'भ्रमर गीत' में देखने को मिलता है।

इनकी प्रमुख श्रेष्ठ कृतियाँ तीन हैं। 'सूरसागर', 'साहित्य लहरी' और 'सूर सारावली'। सूर की भाषा ब्रज है, जो अपनी कोमलता और मधुरता के लिए प्रसिद्ध है। इनकी भाषा सरल, सहज, सुबोध, मधुर एवं गेयात्मक है।

3. रहीम

अब्दुर्रहीम खानखाना मुगल–सम्राट अकबर के नवरत्नों में से एक थे। ये अपने समय के वीर–योद्धा, कुशल राजनीतिज्ञ और सहृदय कवि थे। इनका जन्म सन् 1556 ई. में लाहौर में हुआ था। बैरम खाँ इनके पिता थे। रहीम जब चार ही वर्ष के थे तब इनके पिता को किसी ने हज–यात्रा करते समय मार्ग में ही मार दिया था। अकबर ने ही इनका लालन–पालन किया। रहीम ने तुर्की, अरबी, फारसी और संस्कृत का खूब ज्ञान प्राप्त किया था। रहीम का अंतिम जीवन संकटों में व्यतीत हुआ। सन् 1627 ई. में इनकी मृत्यु हुई। रहीम का मकबरा दिल्ली में बना हुआ है।

रहीम ने चार भाषाओं में रचनाएँ की हैं। हिन्दी में इनकी 'दोहावली', 'बरवैनायिक भेद', 'रासपंचाध्यायी' तथा 'मदनाष्टक' आदि प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। रहीम की भाषा में ब्रज, अवधी, खड़ीबोली और संस्कृत के शब्द मिलते हैं। इन्हें भाषा पर पूरा अधिकार है।

रहीम श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त थे। इन्होंने भक्ति, नीति, वैराग्य, सत्संग, लोक–व्यवहार, स्वाभिमान तथा प्रेम संबंधी भावपूर्ण कविता की रचना की है।

4. सुमित्रानंदन पंत

प्रसाद और निराला की भाँति पंत भी हिन्दी के युगनिर्माता कवि थे। उनका प्रकृति प्रेम सहचरी का रूप है। पर्वतीय प्रदेश की कोमलता उनकी कविता में मूर्तिमान है। वे कोमल उदात्त और गौरवमय व्यक्तित्व के धनी थे। एक ओर 'पल्लव', 'वीणा' आदि रचनाओं में उन्होंने प्रकृति को माता के रूप में चित्रित किया है, तो दूसरी ओर युगांत और युगवाणी में उदार मानवतावादी दृष्टि को अपनाकर सामाजिक, आर्थिक शोषण का विरोध किया है। मुख्यतः कवि ने भौतिकवाद और अध्यात्मवाद की सवन्वयता का प्रयास किया है। उनकी कविता का उदात्त आदर्श लोककल्याण की कामना करता है।

इस कविता में कवि ने अपने बचपन की एक घटना का उल्लेख किया है। जब उसने धरती में पैसे बोये थे जिससे कि वह बड़ा सेठ बन जाय। पैसे नहीं उगे। बचपन की इस घटना के पचास वर्ष बाद उसने 'सेम' के बीज बोये और वे इतने उगे कि फलियों की कोई थाह ही नहीं रही। परिचित और अपरिचित व्यक्तियों ने, भिखारियों ने, मुहल्लेवालों ने जी भरकर सेम की फलियाँ खाई। पर वे समाप्त ही नहीं हुई। इस घटना से कवि इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि यह धरती अपने प्रिय पुत्रों को बहुत कुछ देती है।

5. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

कवि श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय आधुनिक काल के प्रारंभिक कवियों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। खड़ी बोली में पहला महाकाव्य लिखने का श्रेय आप ही को है। इस महाकाव्य का नाम प्रिय–प्रवास है जिस पर आपको 'मंगला प्रसाद पारितोषक' प्राप्त हुआ था। आप ब्रजभाषा में भी शुरू में लिखते रहे, जिसका प्रमाण आपका रसकलस नामक ग्रंथ है। यह श्रृंगाररस की रचना है।

आपने अपना उपन्यास हरिऔध अपने नाम के आधार पर ही चुन लिया था। अध्योध्या को औध कहते हैं और सिंह के लिए संस्कृत में हरि शब्द मिलता है। कुछ विपर्यय के साथ इस प्रकार अध्योध्या सिंह हरिऔध हो गए। द्विवेदी युगीन काव्य–प्रवृत्तियों के आप प्रतिनिधि कवि माने जा सकते हैं। आपने गद्य में भी कुछ रचनाएँ की हैं।

प्रस्तुत 'फूल और काँटा' कविता प्रकृति–प्रेम, परोपकार, गुणों का आदर, गतिविधियाँ, फूल किस प्रकार काँटों के बीच रहकर भी अपनी मादकता से देवताओं के सिर पर चढ़ते हैं। दोनों में, फूल और काँटे में समानता रहकर भी भिन्नता है। बड़प्पन का आशय क्या है। उसका आंतरिक और बाह्य वर्णन किया है।

6. स्वदेश भारती

आधुनिक हिन्दी साहित्य में स्वदेश भारती का कवि के रूप में उल्लेख्यनीय स्थान है। इसके अलावा वे कहानीकार एवं उपन्यासकार भी हैं। इनकी प्रसिद्ध एवं प्रमुख कृतियाँ हैं—कलकत्ता ओ कलकत्ता, दूसरा वामाचार, मन चाहता है अपनापन, सूर्य का आहत मौन, समय की जर्जर नाव में आदि (काव्य संकलन), शवयात्रा, औरतनामा, शहरयार, यातना शिबिर, घटना, दुर्घटना, रेतघर, दूसरी गाँधारी आदि उपन्यास, सातवें दशक की श्रेष्ठ कहानियाँ (संपादित)।

इनकी कविताओं में आज के मानव के संघर्षों का चित्रण है, आधुनिक समाज की विषमताओं, विसंगतियों पर कडा व्यंग्य है, मानवीय मूल्यों का अन्वेषण है एवं गहन आध्यात्म चिंतन है।

स्वदेश भारती राष्ट्रीय हिन्दी अकादमी के संस्थापक एवं इसके अध्यक्ष रहे। कई पुरस्कारों से सम्मानित स्देश भारती जी रूपांभरा के संपादक हैं।

'माँ के प्रति' एक मार्मिक और दिल को छूने वाली कविता है। इसमें कवि ने माँ के असीम वात्सल्य एवं अपने बच्चों से उसकी आशाओं को लेकर सीखा है। किस तरह माँ अपने बच्चे से आशाएँ कर सपने देखती है और बच्चे का भी जीवन के रास्ते पर चलते चलते अंत में थकावट होने पर उसे माँ का प्यार याद आता है और उसी प्यार में उसे अपनी सुरक्षा नजर आती है।

7. माखनलाल चतुर्वेदी

पंडित माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के बाबई नामक गाँव में नन्दलाल चतुर्वेदी के घर में सन् 1888 ई. में हुआ था। नार्मल परीक्षा पास करके ये खंडवा के मिडिल स्कूल में शिक्षक बन गए। अध्यापन कार्य के साथ–ही–साथ अंग्रेजी, गुजराती, मराठी, बँगला और संस्कृत आदि भाषाओं का भी अध्ययन करते रहे। इनकी प्रारंभिक रचनाएँ प्रभा में छपीं। गणेशशंकर विद्यार्थी के सम्पर्क से ये राष्ट्रीय रंग में रंग गए। अध्यापन–कार्य छोड़कर इन्होंने कर्मवीर पत्र का संपादन किया। 'प्रभा' और 'प्रताप' का भी सम्पादन इन्होंने कुछ काल तक किया। सन् 1921 ई. के राष्ट्रीय आन्दोलनों में सक्रिय भाग लेने के कारण इन्हें अनेक बार कारावास का दंड भी भोगना पड़ा। साहित्य–सेवा के लिए सागर विश्वविद्यालय ने इन्हें 'डी.लिट.' की उपाधि से तथा भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया था। आप हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति पद पर भी आसीन हुए थे। सन् 1968 ई. में आपका देहावसान हुआ।

पंडित माखनलाल चतुर्वेदी 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से हिन्दी जगत् में प्रसिद्ध हैं। 'हिमतरंगिनी', 'हिमकिरीटिनी', 'युग चरण', 'समर्पण', 'वेणु लो गूँजे धरा', 'बिजुरी काजल आँज रही' आदि आपके काव्य संग्रह हैं, जिनमें उन्होंने भारतीय आत्माओं को जगाने के लिए स्वर भरे हैं। हिमतरंगिनी' पर साहित्य अकादमी का पुरस्कार तथा हिमकिरीटिनी' पर देव पुरस्कार भी आपको प्राप्त हुए थे।

प्रस्तुत रचना में कवि ने मोमबत्ती के साथ अपने ज्ञान तथा विवेक का रूपक प्रस्तुत किया है। उसमें कवि (अपने विवेक और ज्ञान को) मोम की तरह दूसरों को प्रकाश देने हेतु परोपकारी तथा त्यागी होने की बात करता है। दूसरों के कल्याण के लिए स्वयं का अस्तित्व भूलना, पीड़ा सहना, निगर्वी रहना और संकट में साथ देना ही सच्चा जीवन है, मोम–दीप से यही सन्देश लेना चाहिए। स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देना अर्थात् दूसरों को सुखी बनाना ही असली जीवन है।

8. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

'निराला ' जी का जन्म सन् 1887 ई. में बंगाल के महिषादल राज्य के मेदिनीपुर गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम पं. रामसहाय त्रिपाठी था। निराला जी की प्रारंभिक शिक्षा बँगला में ही हुई। संस्कृत, बँगला, अंग्रेजी भाषाओं का ज्ञान इन्होंने घर पर ही प्राप्त किया। दर्शन और संगीत में इनकी प्रारंभ से रूचि थी। 14 वर्ष की आयु में इनका विवाह हुआ पर शीघ्र ही इन्हें पिता और पत्नी तथा प्रिय पुत्री की मृत्यु के दुख का भारी आघात पहुँचा। उसी समय रामकृष्ण मिशन के संपर्क में आए। इन्होंने समन्वय तथा मतवाला का सम्पादन कार्य भी किया। सन् 1961 ई. में इनका देहावसान हो गया।

निराला जी ने साहित्य की प्रायः सभी विधाओं में रचना की है। काव्य– 'अनामिका', 'नए पत्ते, 'गीतिका', 'तुलसीदास', 'कुकुरमुत्ता', 'अणिमा', 'नए पत्ते', 'बेला', 'अर्चना', 'अपरा', 'सांध्य–काकली', 'आराधना' आदि। उपन्यास–'अप्सरा',

'अलका', 'प्रभावती', 'निरूपमा' आदि। कहानी–'लिली', 'सखी', 'चतुरी चमार', 'सुकुल की बीवी'। रेखाचित्र–'कुल्ली भाट', 'बिल्लेसुर बकरिहा'। आलोचना–रवीन्द्र कविता कानन, प्रबंध–प्रतिभा आदि।

प्रेम, करूणा, प्रकृति–चित्रण, शोषण के विरूद्ध विद्रोह तथा मानव के प्रति सहानुभूति निराला जी के काव्य के प्रमुख विषय हैं। आपकी रचनाएँ छायावाद एवं प्रगतिवाद के श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

सन्ध्या–सुन्दरी 1921 ई. में लिखी गई थी। इसमें कवि आसमान से उतरती परी के रूपक में सन्ध्या को परिकल्पित कर आगे अंकन को विस्तार देता है। सांध्यकाल में गहराती हुई निस्तब्धता के बीच सन्ध्या–सुंदरी मदिरा की नदी बहाती हुई आती है। अंत में कविमुख से विहाग की निःसृति उसकी बेचैनी की सूचक है। ऐसे में सन्ध्या–सुंदरी का समापन अंश समूची कविता के अनुभव को एक खास ढंग की आत्मीयता और उन्मुक्ति से संपृक्त कर देता है।

III. वाणिज्य एवं प्रशासनिक शब्दावली

1.	Audit	– लेखा परीक्षा
2.	Administration	– प्रशासन
3.	Bearer cheque	– धारक चैक
4.	Bulk Purchase	– थोक खरीद
5.	Chamber of Commerce	– वाणिज्य मंडल
6.	Credit Note	– उधार पत्र
7.	Down Payment	– तत्काल अदायगी
8.	Dividend	– लाभांश
9.	Export	– निर्यात
10.	Economic Planning	– आर्थिक आयोजना
11.	Face Value	– अंकित मूल्य
12.	Financial Year	– वित्तीय वर्ष
13.	Grant	– अनुदान
14.	Gazetted Officer	– राजपत्रित अधिकारी
15.	Industrial Area	– औद्यागिक क्षेत्र
16.	Insurance	– बीमा
17.	Joint Venture	– संयुक्त उपक्रम
18.	Liabilities	– देयधन
19.	Money Market	– मुद्रा बाजार
20.	Manager	– प्रबंधक
21.	Notified	– अधिसूचित
22.	Ownership	– स्वामित्व
23.	Ordinance	– अध्यादेश
24.	Provident Fund	– भविष्य निधि
25.	Profit and Loss Account	– लाभ हानि लेखा
26.	Registration	– पंजीकरण
27.	Sales Tax	– विक्रय कर
28.	Tender	– निविदा
29.	UnderSigned	– अधोहस्ताक्षरी
30.	Wholesale	– थोक